।। अथ सूर्यादिनवग्रहशान्तिप्रयोगः।।

स्वस्तिपुण्याहवाचनमाचार्यवरणं दिग्रक्षणं अग्निस्थापनपूर्वकं सामान्यतो ग्रहपूजनं च पूर्ववत् कुर्यात् ।

।। अथ आदित्यस्य शान्तिः ।।

मदनरत्ने हस्तनक्षत्रयुतं आदित्यवारं प्रगृह्य सप्तनक्तव्रतानि भक्तितः कृत्वा प्रतिदिनं रक्तपुष्पाक्षतादिभिरर्कमभ्यर्च्य सप्तमे प्राप्ते प्रातः स्नात्वा शुक्लधौतवाससी परिधाय यथायोग्यालङ्कृतः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य दक्षिणपार्श्वे संभारान् संस्थाप्य धृतपवित्रतिलकः पत्न्या समारब्धो द्विराचम्य प्राणानायम्य

शान्तिपाठं पठित्वा लक्ष्मीनारायणादिदेवान् प्रणमेत् । ततो देशकालौ संकीर्त्य अद्य० शुभपुण्यतिथावमुकगोत्रोऽमुकशर्मा वा गुप्तोऽहं मम श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम कलत्रादिभिः सहजन्मराशेः सकाशात् नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नात् वर्षलग्नात् गोचराद्वा चतुर्थाष्टमद्वादशाद्यनिष्टस्थानस्थितसूर्येण सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत् सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादशशुभस्थानस्थितवदुत्तमफल - प्राप्त्यर्थं तथा दशान्तरदशोपदशाजनित-पीडाल्पायुरधिदैवाधिभौतिकाध्यात्मिकजनितक्लेश निवृत्तिपूर्वकशरीरारोग्यार्थं परमैश्वर्य्यादिप्राप्त्यर्थं श्रीसूर्यनारायणप्रसन्नतार्थं चादित्यशान्ति करिष्ये ।

इति संकल्प्य तदंगत्वेन गणपतिपूजनं ततो वेदीमध्ये पद्मे ताम्रकलशं संस्थाप्य तदुपरि ताम्रपात्रे शुद्धसुवर्णमयीं प्रधानदेवसूर्यप्रतिमां अग्न्युत्तारणपूर्वकं सन्निधाय रक्तपट्टयुगच्छन्नां छत्रोपानद्युगान्वितां च कृत्वा घृतेन संस्नाप्य रक्तचन्दनरक्तपुष्पाक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य लड्डूकान्निवेद्य प्रणम्य कुशकण्डिकां कृत्वा आज्यभागान्ते प्रधानदेवसूर्याय दधिक्षीरघृताक्ताश्वरुशाकल्य सहिता अर्कसमिधः **ॐ आकृष्णेन रजसेति** मन्त्रेणाष्टोत्तरशतसंख्यया जुहुयात् इदं सूर्याय न

मम इति त्यागः कार्यः । ततो होमान्ते दिक्पालक्षेत्रपालादिभ्यो बलिदानं पूर्णाहुतिहोमं च कृत्वा ततो मंजिष्ठा गजमदं कुकुमं रक्तचन्दनं जलपूर्णे ताम्रकुम्भे क्षिप्त्वा पूर्ववदभिषेकं ग्रहस्नानं च कुर्यात् । ततो वेदविदुषे ब्राह्मणाय ॐ इमां सूर्यप्रतिमां सोपस्करां तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति संकल्प्य

ॐ आदिदेव नमस्तुभ्यं सप्तसप्ते दिवाकर ।
त्वं रवे तारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात् ।।

इति मन्त्रेण प्रतिमां दद्यात् । ततो माणिक्यगोधूम-धेनु - रक्तवस्त्र-गुड-ताम्र-रक्तचन्दन - कमलानि रवेः प्रीत्यर्थं देयानि । ततो विप्रेभ्यो दक्षिणादानम्, देवविसर्जनं च कृत्वा ब्राह्मणान् सम्भोजयित्वा कर्मपूर्तिकामो विष्णुं संस्मरेत् एवं सूर्यपीडासु घोरासु कृता शान्तिः शुभप्रदा । इत्यादित्यशान्तिः ।

सर्वप्रथम सूर्य की शान्ति कहते हैं। मदनरत्न के अनुसार हस्त नक्षत्र से युक्त रविवार के दिन सात रात्रि भक्तिपूर्वक व्रत करके प्रतिदिन लाल फूल चन्दन आदि से सूर्य की पूजा करके सातवें दिन प्रातः स्नान करके सफेद धोती उत्तरीय धारण करके आसन पर पूर्वाभिमुख बैठे। अपने दाहिने तरफ सभी

सामग्री रखकर पवित्र तिलक धारण कर पत्नी के सहित आचमन करके प्राणायाम करे । शान्तिपाठ स्वस्त्ययन आदि पढ़ने के बाद हाथ में जल अक्षत पुष्प, द्रव्य लेकर ॐ अद्येह से करिष्ये तक संकल्प पढ़कर जल छोड़ दे।

फिर गणेश गौरी का पूजन स्वस्ति, पुण्याहवाचन ब्राह्मणवरण तक करके वेदी के मध्य भाग में पद्म अष्टदल बनाकर उस पर कलश स्थापित करे। तांबे के पात्र में सुवर्ण की सूर्य की प्रतिमा अग्न्युत्तारणपूर्वक स्थापित कर जोड़ी लाल वस्त्र छाता, जूता आदि से युक्त कर घी से स्नान कराकर लाल चन्दन फूल अक्षत आदि से पुरुषसूक्त से पूजन कर लड्डू चढ़ावे। फिर अग्निस्थापना कर दही, दूध, घी मिले शाकल्य से मदार की लकड़ी में ॐ आकृष्णेन से पश्यन् तक मन्त्र से १०८ हवन कर पूर्णाहुति कर दिक्पाल क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करे ।

पूर्णाहुति होम करके मजीठ गजकेशरी कुंकुम रक्त चन्दन तांबे के कलश में रखकर अभिषेक करे। फिर विद्वान् ब्राह्मण को सुवर्ण की प्रतिमा भोजन सहित संकल्प करके प्रदान

करे। ॐ आदिदेव से सागरात् तक मन्त्र पढ़कर दे। फिर माणिक्य, गेहूँ, गौ, लाल वस्त्र, गुड़, तांबा, लाल चन्दन कमल के फूल सूर्य की प्रीति हेतु दान करे। फिर ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर देव विसर्जन ब्राह्मण भोजन कराकर विष्णु का स्मरण करे।

।। अथ चन्द्रशान्तिप्रयोगः।।

चित्रासु सोमवारं संगृह्य सप्तनक्तव्रतानि कृत्वा प्रतिदिनं श्वेतपुष्पादिभिः सोममभ्यर्च्य सप्तमे प्राप्ते प्रातः स्नानादि विधाय, देशकालौ संकीर्त्य अर्कशान्त्युक्तवत् संकल्पान्ते चन्द्रशान्तिं करिष्ये। इति संकल्प्य गणपतिपूजनादि अग्निस्थापनान्तं कर्म कृत्वा ग्रहपूजनं कुर्यात् ।

ततो मण्डलमध्ये दध्यन्नशिखरे राजतं कुंभं संस्थाप्य तदुपरि कांस्यपात्रे राजती सोमप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं सन्निधाय श्वेतवस्त्रयुगलेन संवेष्ट्य पादुकोपानहच्छत्र-भोजनासनसंयुतं च कृत्वा श्वेतपुष्पाक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य घृतपायसं निवेद्य, आज्यभागान्तं होमं कृत्वा प्रधानदेवसोमाय दधि-मधु-क्षीरघृताक्ता: शाकल्यसहिताः पलाशसमिधाष्टोत्तरशतम् । **ॐ इमं देवाऽसपत्न ॐ** इति मन्त्रेण जुहुयात् । ततो होमान्ते बलिदानादि पूर्वोक्तवद् कर्म समाप्य राजते कुंभे उशीरं, शिरीषं, कुंकुमं, श्वेतचन्दनं, शंखं न्यस्य अभिषेकं स्नानं च कृत्वा

ॐ महादेव जातिवल्लीपुष्पगोक्षोरपांडुर।
सोम सौम्यो भवास्माकं सर्वदा ते नमो नमः ।।

इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां सोपस्करां वंशपात्रस्थतंदुलकर्पूरमौक्तिकश्वेतवस्त्रपूर्णकुंभवृषभांश्च निवेद्य देवविसर्जनं ब्राह्मणभोजनादि सर्वं कर्म पूर्ववत् समापयेत् एवं कृते महासौम्यः सोमस्तुष्टिकरो भवेत्

।।इति चन्द्रशान्तिः ।।

चित्रा नक्षत्र में सोमवार से सात रात्रि तक व्रत

करके प्रतिदिन सफेद फूल आदि से चन्द्रमा की पूजा करके सातवें दिन प्रातः स्नान करके कुश अक्षत जल द्रव हाथ में लेकर देश - कालादि उच्चारणपूर्वक अद्येह से करिष्ये तक संकल्प पढ़कर जलादि छोड़े। फिर गणपति गौरी का पूजन कर अग्नि स्थापना कर ग्रहपूजा करे।

फिर मण्डलमध्य में दही चावल के ढेर पर चाँदी का कलश स्थापित कर उस पर काँसे के पात्र में चाँदी की चन्द्रमा की प्रतिमा का अग्नुत्तारणपूर्वक प्रतिष्ठा करके सफेद जौ वस्त्र में लपेटे। फिर खड़ाऊँ, जूता, छाता, भोजन आसनयुक्त कर श्वेत फूल आदि से पुरुषसूक्त से पूजा करके घी पायस का नैवेद्य अर्पित करे। आज्यभागान्त हवन कर दही, मधु, दूध, घी मिले शाकल्य से पलाश की समिधा में **इमं देवा से राजा** तक मन्त्र से १०८ हवन करे। होम के बाद बलिदान कर्म पूरा करके रजत कुम्भ में उशीर शिरीष कुंकुम सफेद चन्दन शंख रखकर अभिषेक करे । **ॐ महादेव से नमो नमः** तक मन्त्र पढ़े | इस मन्त्र से ब्राह्मण को प्रतिमा, सीधा बाँस की डलिया में चावल कपूर, मोती, सफेद वस्त्रपूर्वक वृषभ अर्पण

करके देवताओं का विसर्जन करे। ब्राह्मण भोजन आदि सभी कार्य कर समापन करे । ।

।। अथ मङ्गलशान्तिः ।।

स्वात्यां भौमवारं संगृह्य सप्तनक्तव्रतेषु भूमावेव भोजनं विधाय सप्तमे प्राप्ते पूर्ववत् सर्वं कृत्वा मण्डलमध्ये कलशं संस्थाप्य तदुपरि ताम्रपात्रे सुवर्णमयीं मङ्गलप्रतिमां निवेश्य रक्तच्छन्नां कुंकुमेनानुलेपितां कृत्वा रक्तपुष्पाक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः संपूज्य भक्त्या कंसारं निवेद्य दधिघृताक्ताः शाकल्यसहिताः खादिर्यः समिधः अष्टोत्तरशतं अग्निर्मूर्धा दिव इति मंत्रेण मंगलाय जुहुयात् । ततः पूर्ववद्धोमं समाप्य ॐ कुज कुप्रभवोऽपि त्वं मंगलः परिगद्यसे। अमंगलं निहत्याशु सर्वदा यच्छ मंगलम् ।। इति मन्त्रेण कस्मैचित् कुटुम्बिने ब्राह्मणाय मंगलप्रतिमादानं-

प्रवाल-गोधूम-मसूरिका-रक्तवृषभ-गुड-सुवर्ण-रक्तवस्त्र - ताम्रादिदानं च कुर्यात् ।। ततो रौप्यकुंभे खदिरं देवदारु तिलानि आमलकानि च न्यस्य अभिषेकं स्नानं च कुर्यात् । अन्यत् सर्वं पूर्ववत् इति भौमशान्तिः ॥

।। इति भौमशान्तिः।।

स्वाती नक्षत्र में मंगलवार हो तो उसी दिन से सात दिन का व्रत रखकर जमीन पर भोजन करे। सात दिन पूरा होने पर मण्डल बनाकर मण्डल के बीच में कलश स्थापन कर पञ्चपल्लव आदि रख कर उसके ऊपर ताम्रपात्र में सुवर्णनिर्मित मंगल की प्रतिमा स्थापित कर लाल वस्त्र से तथा लाल चन्दन कुंकुम आदि से पूजन करे। दही, घी मिले शाकल्य से कत्था के समिधा में अग्नि-स्थापना कर ॐ अग्नि से जिन्वति पर्यन्त मन्त्र पढ़कर भौमाय स्वाहा से १०८ आहुति प्रदान करे । समाप्ति पर ॐ कुज से मंगलं तक मन्त्र पढ़कर सुवर्ण प्रतिमा किसी परिवार वाले ब्राह्मण को दे दे। उस प्रतिमा के साथ प्रवाल, गोधूम, मसूर, गुड़, सोना, लाल रंग का वृषभ, लाल वस्त्र और ताम्र पात्र भी दे दे। पश्चात्

चाँदी के घड़े में खैर, देवदारु, तिल, आमला जल डालकर उसी से अभिषेक स्नान करे । शेष पहिले की तरह करे ।

।। अथ बुधशान्तिप्रयोगः ।।
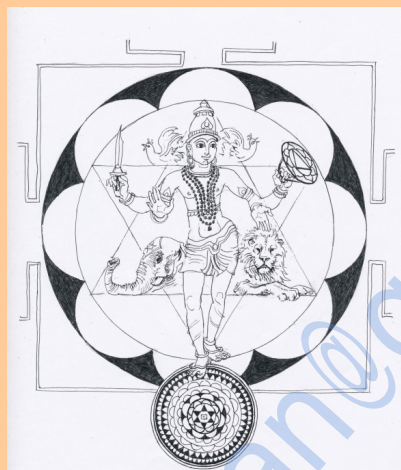
विशाखासु बुधं संगृह्य सप्त नक्तव्रतानि सप्तमे प्राप्ते सुवर्णप्रतिमां कांस्यपात्रे संस्थाप्य शुक्लवस्त्रयुगच्छन्नां कृत्वा शुक्लगन्धाक्षतपुष्पादिभिः संपूज्य गुडौदनोपहारं निवेद्य दधिमधुघृताक्ताः शाकल्यसहिता अपामार्गसमिद्भिः अष्टोत्तरशतं "ॐ **उद्बुध्यस्वाग्ने"** इति मन्त्रेण जुहुयात् । ततो होमान्ते

ॐ बुध त्वं बुद्धिजननो बोधवान् सर्वदा नृणाम्।
तत्त्वावबोधं कुरु मे सोमपुत्र नमो नमः ।।

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां नीलवस्त्रसुवर्णकांस्यमुद्गगरुत्मतहस्तिदन्तपुष्पाणि च निवेद्य मृण्मयकलशे नदीसंगमतोयानि च निक्षिप्य अभिषेकं स्नानं च कुर्यात् । अन्यत् सर्वमादित्यशान्तिवत् ।

।। इति बुधशान्तिः।।

जब विशाखा नक्षत्र में बुधवार पड़े तो उसी दिन से ७ रात्रि का व्रत उठावे, जब पूरा हो जाय तब बुध की सुवर्ण प्रतिमा बनवा कर काँसे के पात्र में रखे । उनको स्नान करावे । सफेद वस्त्र से ढंके । सफेद चन्दन अक्षत फूल आदि से पूजन करे। गुड़ चावल का भोग लगावे । दधि मधु घी से सने साकल्य और अपामार्ग की समिधा से अग्नि जलाकर **ॐ उद् से सरित** तक मन्त्र पढ़कर १०८ आहुति दे । फिर हवन के पश्चात् ॐ बुधत्वं से नमो नमः तक मन्त्र पढ़ते हुए प्रतिभा, नीले वस्त्र, कांसे का पात्र, मूंग, हाथी दांत, पन्ना, सुवर्ण, ब्राह्मण को दे दे। फिर कलश में संगम का जल छोड़ कर उससे अभिषेक स्नान करे।

अन्य कर्म पूर्ववत् कर समापन करे।

।। अथ बृहस्पतिशांतिप्रयोगः ।।
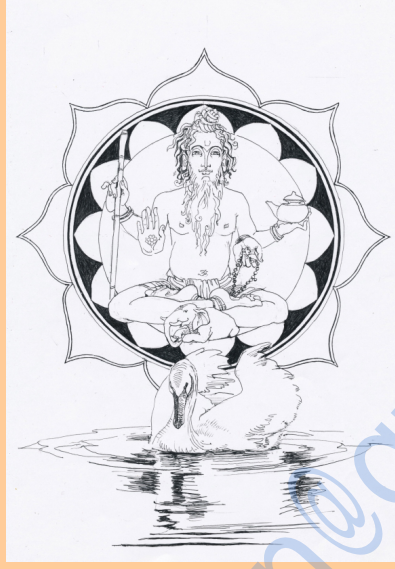
अनुराधासु गुरुवारं प्रगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे प्राप्ते पूर्वोक्तादित्यशान्तिसर्वं कार्यं कृत्वा मण्डलमध्ये सुवर्णपात्रे सुवर्णमयीं बृहस्पतिप्रतिमां संस्थाप्य पीताम्बरयुगच्छन्नां पीतयज्ञोपवीतिनीं पादुकोपानच्छत्रकमण्डलु-विभूषितां च कृत्वा पीतगन्धाक्षतपुष्पादिभिः पुरुषसूक्तेन सम्पूज्य खण्डखाद्योपयात् । ततो होमान्ते

ॐ धर्मशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ ज्ञानविज्ञानपारग।
विबुधार्तिहराचिन्त्य देवाचार्य नमोऽस्तु ते ॥

इति ब्राह्मणाय गुरोः प्रतिमां पुष्परागमाणिक्यहरिद्राशर्कराश्च पीतधान्यपीतवस्त्र-

लवणसुवर्णानि च निवेद्य सुवर्णकलशे औदुम्बरं बिल्वं वटं आमलकं च निक्षिप्य तद्युक्तजलेन अभिषेकं च कुर्यात्। अन्यत्सर्वं आदित्यशान्तिवत्।

।। इति गुरुशान्तिः ।।

जिस दिन अनुराधा नक्षत्र में गुरुवार पड़े तो उसी दिन से आरम्भ कर सात रात्रि तक व्रत पूरा करे। फिर सातवें दिन आदित्य व्रत की भाँति विधि पूरा करके मण्डल बनाकर मण्डल के मध्य में सुवर्ण पात्र में सुवर्ण की बृहस्पति की प्रतिमा स्थापित करे । पीत वस्त्र, यज्ञोपवीत, खडाऊँ, जूता, कमण्डलु से पीले चन्दन फूल अक्षत आदि से पुरुषसूक्त से पूजन कर खाँड आदि नैवेद्य समर्पण करे। दही, शहद, घी मिले शाकल तैयार **ॐ धर्म से नमोऽस्तु ते** तक पढ़कर गुरु की प्रतिमा, पुखराज, माणिक्य, हल्दी, शक्कर, पीले धान, पीला वस्त्र, नमक, सुवर्ण, ब्राह्मण को देकर सुवर्ण कलश में गूलर वेल वरगद आंवला के जल भरकर उसी जल से अभिषेक व स्नान करे ।

।। अथ शुक्रशान्तिप्रयोगः ।।
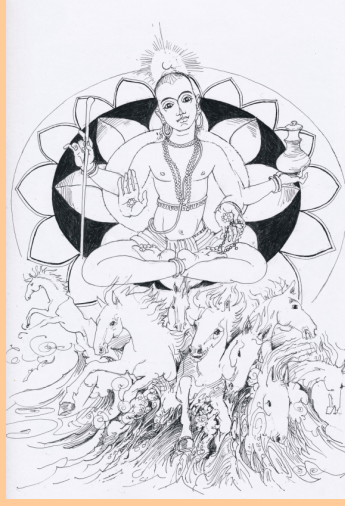
ज्येष्ठासु शुक्रं प्रगृह्य सप्तनक्तव्रतेषु भूमावेव भोजनं कृत्वा सप्तमे प्राप्ते वंशपात्रे रजतशुक्रप्रतिमां संस्थाप्य श्वेतचन्दनपंकजैः तदभावे श्वेतपुष्पादिभिश्च पुरुषसूक्तेन सम्पूज्य घृतसंयुतं पायसं निवेद्य दधिमधुघृताक्ताः शाकल्यसहिता उदुम्बरसमिधः अष्टोत्तरशतं अन्नात्परिस्रुतो रसमिति मन्त्रेण जुहुयात् । ततो होमान्ते

ॐ भार्गवो भर्गः शुक्रश्च श्रुतिस्मृतिविशारदः ।
हित्वा ग्रहकृतान् दोषान् आयुरारोग्यदोऽस्तु सः॥

इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां चित्रवस्त्र, श्वेताश्व, धेनु, वज्र, मणि, सुवर्ण, रजतं तण्डुलानि च निवेद्य रजतकलशे गोरोचनं, कस्तूरिकां,

शतपुष्पां, शतावरीं च निक्षिप्य तेनाभिषेकं स्नानं च कुर्यात् । अन्यत्सर्वं पूर्ववत् ।

।। इति शुक्रशान्तिः ।।

ज्येष्ठा नक्षत्र में शुक्रवार पड़े तो उसी दिन से आरम्भ कर ७ दिनों तक भूमि पर भोजन करते हुए सातवें दिन बाँस की डलिया में चाँदी की शुक्र की प्रतिमा स्थापित कर सफेद चन्दन, सफेद कमल आदि से पुरुषसूक्त द्वारा पूजा करे, घृत पायस का नैवेद्य अर्पण करके दही शहद, घी मिला शाकल्य गूलर की समिधा से अग्नि प्रज्वलित कर ॐ अन्नात्परि से मधु तक मन्त्र से १०८ आहुति देकर हवन करे। हवन की समाप्ति पर ॐ भार्गवो से सः तक मन्त्र पढ़ते हुए प्रतिमा चित्र वस्त्र सफेद घोड़ा गौ, हीरा मणि सुवर्ण, चाँदी चावल ब्राह्मण को प्रदान करे। फिर चाँदी के कलश में गोरोचन कस्तूरी सप्तपर्णी शतावरी जल डालकर उसके जल से अभिषेक और स्नान करे ।

।। अथ शनैश्चरशान्तिप्रयोगः ।।
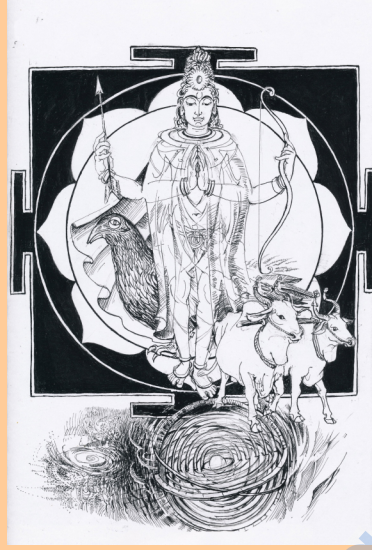
द्वादशाष्टमजन्मस्थे शनौ। श्रावणादिमासे प्रथमशनिवारं प्रगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे पूर्वोक्तादित्यशान्तिवत् सर्वं कृत्वा लोहपात्रे लोहमयीं शनैश्चरप्रतिमां संस्थाप्य कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नां, माषतिलकंबलयुतां च कृत्वा पंचामृतेन संस्नाप्य कस्तूरी-कृष्णागरुकृष्णपुष्पाक्षतादिभिः षोडशोपचारैः सम्पूज्य कृसरान्नं माषभक्तं पायसं अविलीं पूरिकां च निवेद्य दधिमधुघृताक्ताः शाकल्यसहिताः शमीसमिध अष्टोत्तरशतं – ॐ शन्नो देवीरिति मन्त्रेण जुहुयात् । ततो होमान्ते बलिदानं पूर्णाहुतिहोमं च सम्पाद्य प्रतिमां इन्द्रनील, माष, तैल, कुलित्थ, महिषी, लोह, कृष्णधेनूश्च दद्यात् । - लोहकुंभे तिल, माष,

प्रियंगु- गंधपुष्पाणि प्रक्षिप्य तद्युक्तजलेनाभिषेकं स्नानं च कुर्यात् । अन्यत्सर्वं पूर्ववत् ।

।। इति शनैश्चरशान्तिः ।।

१२, ८, १ भाव में शनि के रहने पर श्रावण आदि मास में प्रथम शनिवार जब पड़े, उस दिन से व्रत आरम्भ कर ७ दिन पूरे होने पर पूर्ववत् शान्ति करके लोहे के पात्र में लोहे की शनि-प्रतिमा तैयार कर स्थापना करके उसे काले वस्त्र से ढके। उड़द, तिल, कम्बल रखकर पञ्चामृत से स्नान करावे। फिर कस्तूरी, काला अगर, काले अक्षत, पुष्प आदि से षोडशोपचार पूजन कर खिचड़ी उड़द भात पायस अविली पूडी अर्पण कर दही, मधु, घी से सने शाकला से शमी की समिधा जलाकर अग्नि में ॐ शन्नो देवी से अवन्तु नः तक मन्त्र पढ़ते हुये शनिदेव को आहुति प्रदान करे। हवन के बाद बलिदान पूर्णाहुति पूरा करके प्रतिमा इन्द्र नीलमणि (नीलम) उड़द, तेल, कुलथी, भैंस, लोहा, काली गौ किसी ब्राह्मण को समर्पित करे। फिर लोहे के घड़े में तिल उड़द काकुन चन्दन फूल डालकर जल समेत करके उसी जल से अभिषेक और स्नान करे।

अन्य सभी कार्य आदित्यशान्ति की भाँति करे।

।। अथ राहुकेतुशान्तिप्रयोगः ।।

शनैश्चरवारे राहुव्रतं प्रगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे प्राप्ते लोहपात्रे राहोर्लोहप्रतिमां संस्थाप्य कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नां च कृत्वा पंचामृतेन संस्नाप्य गन्धपुष्पाक्षतादिभिः संपूज्य पायसं निवेद्य दधिमधुघृताक्ताः शाकल्यसहिता दूर्वासमिधाष्टोत्तरशतं **ॐ कयानश्चित्रेति** मंत्रेण जुहुयात् । ततो होमान्ते प्रतिमादानं कृत्वा गोमेदाश्व, नीलवस्त्र, कंबल - तैल-तिल-लोहानि राहवे वैडूर्य-तैल-तिल - कंबल - कस्तूरी- छाग-वस्त्राणि च केतवे दद्यात् ।

माहिषेशृंगे गुग्गुलं, हरितालं, मनः शिलां च

निक्षिप्य तेनाभिषेकं स्नानं च कुर्यात् । सर्वं ब्राह्मणभोजनादि पूर्ववत् । एवमेव केतुशान्तिस्तत्र समिधः कुशमच्यः । मन्त्रः – ॐ केतुं कृण्वन् इत्यादि स्नानं तु वराहविहितपर्वताग्रमृदं छागक्षीरं खड्गपात्रे कृत्वा कुर्यात् । अन्यत् सर्वं पूर्वोक्तशान्तिवत् ।

।। इति राहुकेतुशान्तिप्रयोगः ।।

शनिवार के दिन से राहू का व्रत आरम्भ कर सात रात तक व्रत करके सातवें दिन

लोहे के पात्र में लोहे की राहू की प्रतिमा स्थापित कर काले वस्त्र से ढक दे। पञ्चामृत से नहलाकर चन्दन, फूल, अक्षतादि से पूजन कर दही, शहद, घी मिले शाकला से दूब की समिधा से अग्नि प्रज्वलित कर शनि ॐ क से वृता तक मन्त्र से १०८ आहुति राहू को प्रदान करे। फिर होम के पश्चात् प्रतिमा दान के साथ ही गोमेद, अश्व, नीला वस्त्र, कम्बल, तेल, तिल, लोहा राहू के लिए वैदूर्य, लाजावर्त, तिल, कम्बल, कस्तूरी, बकरा, वस्त्रादि केतु के लिए प्रदान करे ।

भैंस के सींग में गुगुल हरिताल मैनसिल जल भरकर उससे अभिषेक स्नान करे, शेष ब्राह्मण भोजन आदि पूर्ववत् करे। ऐसे ही केतु की भी शान्ति करे। उसमें समिधा कुश की, आहुति मन्त्र ॐ केतुं से जायथा तक १०८ हवन करना चाहिये । स्नान अभिषेक कोल की खोदी मिट्टी और बकरी का दूध खगौता में भरकर करना चाहिए।

।। इति सूर्यादिनवग्रहशान्तिप्रयोगः ।।